शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का अध्ययन (बून्दी जिले के सन्दर्भ में)

खेमचन्द (शोधार्थी)
करियर पॉइंट विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान
डॉ. रीटा शर्मा (निर्देशक)
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय
सीटीई केशव विद्यापीठ
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार के लिए ऐसी क्षमताएँ हैं जो व्यक्ति की दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती है। जीवन एक अनुपम उपहार है। अतः जीवन को विविध कौशलों की शिक्षा देने का कार्य शिक्षा जगत का है। शिक्षा जगत में जीवन कौशल की अपनी विशिष्ट अवधारणा है। वह शिक्षा विद्यार्थी को समाजोपयोगी, राष्ट्रपयोगी व सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बना सके। व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास से शिक्षा व शिक्षालयों को सार्थकता प्रदान कर सके, व्यक्ति को घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व से अपनत्व का अहसास करा सके, अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सके, जीवन के संघर्षों को समझने और उनसे जूझने की क्षमता प्रदान कर सके, जीवन की आपत्तियों से घबरा कर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेक सम्मत सामना कर सके। वही जीवन कौशल है। वस्तुतः जीवन से जुड़े तनाव भावनाओं व संवेदनाओं के साथ समन्वय एवं सन्तुलन पैदा करने की क्षमता प्रदान करती है। जीवन कौशल शिक्षा से सम्प्रेषण एवं अंतर्व्यक्तिक सम्बन्धों में आशाजनक परिवर्तन आता है। समस्या समाधान, विवेक सम्मत निर्णय, पहल, दक्षता आदि जीवन कौशल शिक्षा की देन है। जीवन का एकाकीपन, सन्तुष्टि प्रदान करने वाली रचनात्मक कार्यों को परिपूर्ण करता है, न कि भौतिकता की चकाचौंध से। स्वयं के बारे में चिन्तन, परिवार व समाज के बारे में चिन्तन के पश्चात सही निर्णय लेने की क्षमता जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है।

हमारी शिक्षा पद्धति का उद्देश्य बालक को सर्वगुण सम्पन्न बनाना है तथा उनकी जन्मजात प्रवृत्तियों का सुनियोजित तरीके से विकास करना है। बालकों को जीवन कौशल की शिक्षा प्रदान करना वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह कार्य सुनियोजित ढंग से होना चाहिए जो बालकों को

जीवन जीने की कला को आत्मसात करने, समझने व सुनिश्चित करने में मदद कर सके। सर्वांगीण विकास का कार्य शिक्षक द्वारा सुन्दर ढंग से सम्पादित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत जीवन कौशल शिक्षा का अध्ययन किया गया है।

समस्या का औचित्य

जीवन कौशल शिक्षा का महत्व वर्तमान परिदृश्य में सर्वविदित है। जीवन कौशल अपनी सरलता व रौचकता के कारण मानव मन में जिज्ञासा का भाव उत्पन्न करता है। जीवन कौशल शिक्षा को आज पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार कर लिया है। विभिन्न देशों में जीवन कौशल शिक्षा पर शोध कार्य चल रहे हैं। भारत में कई राज्यों को स्कूली शिक्षा व महाविद्यालयी शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षण अनिवार्य है।

यह शोध जीवन कौशल शिक्षा को व्यवहारिक रूप से अपनाने में सहायक सिद्ध होगा।

समस्या कथन

'उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का अध्ययन'

शोध का उद्देश्य

- शोधकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं -
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अनुसार अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का लिंगभेदानुसार अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का ग्रामीण एवं शहरी निवास के अनुसार अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

- प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है :
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अनुसार कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का लिंगभेदानुसार कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा का ग्रामीण एवं शहरी रहनिवास के अनुसार कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन

अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य को निम्नलिखित प्रकार से सीमांकित किया है -

- प्रस्तुत शोध राजस्थान राज्य के बून्दी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।
- इस शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

• इस शोध में राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के 50-50 विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

उच्च माध्यमिक विद्यालय - वे विद्यालय जिनमें कक्षा 11-12 के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

जीवन कौशल - जीवन कौशल से अभिप्राय अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार की ऐसी क्षमताएं हैं, जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों का प्रभावीरूप से सामाना करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

राजकीय विद्यालय - ऐसे विद्यालय जो राज्य सरकार के द्वारा संचालित किये जाते हैं।

अराजकीय विद्यालय - ऐसे विद्यालय जो किसी सामाजिक संस्था द्वारा संचालित किये जाते हैं।

न्यादर्श

बून्दी जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों को ही सीमित किया गया है। इसका वर्गीकरण इस प्रकार है।

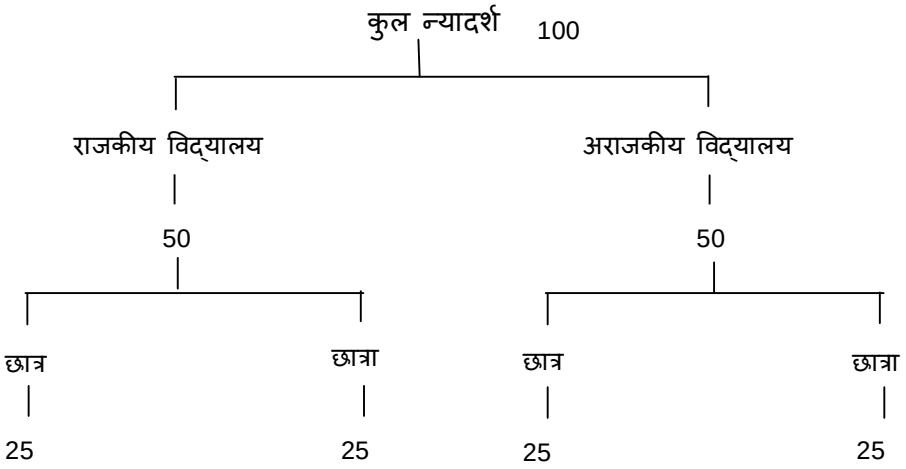

शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा पर राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों से संबंधित प्रभावों के अध्ययन हेतु निम्न स्वनिर्मित उपकरण विद्यार्थी जीवन कौशल शिक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है-

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. टी-मूल्य

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों तथा छात्राओं पर जीवन कौशल शिक्षा के आयामों को समझना, अन्तर्वयक्तिक सम्बन्ध, स्व-जागरूकता, विवेचनात्मक चिन्तन, प्रभावी सम्प्रेषण, तनावों से जूझना व

तदनुभूति पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों तथा छात्राओं पर जीवन कौशल शिक्षा के आयामों, सृजनात्मक चिन्तन, भावनाओं को परखना एवं समस्या समाधान पर लिंगभेद का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल आयामों, अन्तर्वयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिन्तन, विवेचनात्मक चिन्तन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जुझना, प्रभावी सम्प्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से मुक्त होना व तदनुभूति पर ग्रामीण व शहरी निवास का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *बेस्ट जे. डब्ल्यू. (1963), रिसर्च इन एज्युकेशन न्यू दिल्ली प्रेन्टीस हालक ऑफ़ इण्डिया*
- *बुच एम. बी. (1971,1979,1978,1983), ए सर्वे ऑफ़ रिसर्चेज इन एजुकेशन बड़ोदा सेन्टर ऑफ़ एडवान्स स्टडीज इन एजुकेशन, बड़ोदा*
- *गुड, सी. वी. स्केट्स डी. ई. (1957), अनुसंधान विधियाँ न्यूयार्क एप्लीकेशन*
- *कोल, लोकश (1998)ण् शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस*